उमापति

जीवन-काल : 16म् शताब्दीक उत्तरार्द्धसँ 17म् शताब्दीक उत्तरार्द्ध धरि।

कृति : **'पारिजात-हरण'** (नाटक)।

उमापति एक मात्र नाटक-'पारिजात हरण' लिखि अमर भऽ गेलाह जे मूलत: कीर्त्तनियाँ शैलीमे लिखल गेल नाटक अछि। एहिमे 21 गोट मैथिली गीत, 19 गोट संस्कृत-श्लोक आदि भेटैत अछि। यद्यपि हिनकासँ पूर्वहि ज्योतिरीश्वर ओ विद्यापति द्वारा संस्कृतक तत्कालीन नाट्य-धारामे मैथिली गीतक प्रयोग भऽ चुकल छल मुदा हिनका द्वारा प्रयुक्त मैथिली गीत द्वारा कतेको ठाम नाटकक कथानकक विकास सेहो परिलक्षित होइत अछि। ओही मैथिली गीत सभमेसँ प्रस्तुत पद्य चयनित कयल गेल अछि।

काव्य-सन्दर्भ : नारद स्वर्गसँ पारिजात नामक फूल आनि कृष्णकेँ उपहार दैत छथिन। कृष्ण ओ फूल रूक्मिणीकेँ दऽ दैत छथि। सत्यभामा कुपित भऽ जाइत छथि। कृष्ण छोटकी रानीकेँ प्रसन्न करबा लेल स्वर्ग पर आक्रमण कऽ इन्द्रकेँ पराजित करैत छथि। पुन: पारिजात वृक्षक हरण कऽ सत्यभामाकेँ अर्पित कऽ प्रसन्न करैत छथि। युद्धक वर्णनक कारणेँ वीर रस प्रधान अछि मुदा कथानकक मूल भाव पर दृष्टिपात कयला पर स्पष्ट भऽ जाइछ जे ई पाँती श्रृंगार रस प्रधान थिक। एहि ठाम सत्यभामाक क्लेशक वर्णन कयल गेल अछि।

धनिक विशेष

कि कहब माधव तनिक विशेषे ।
अपनहु तन धनि पाव कलेशे ॥
अपनुक आनन आरसि हेरी ।
चानक भरम काँप कत बेरी ॥
भरमहुँ निअकर उरपर आनी ।
परसे तरस सरसीरुह जानी ॥
चिकुर-निकर निअ नयन निहारी ।
जलधर जाल जानि हिअ हारी ॥
अपन वचन पिक-रव अनुमाने ।
हरि हरि तेहु परि तेजए पराने ॥
माधव आबहु करिअ समधाने ।
सुपुरुष निठुर न रहए निदाने ॥
सुमति उमापति भन परमाने ।
माहेसरि देइ हिन्दूपति जाने ॥

●

शब्दार्थ– धनि = नायिका; कलेशे = कष्ट; आनन = मुँह; आरसि = अयना; हेरी= देखिकऽ; चान = चन्द्रमा; भरम = भ्रम, सन्देह; निअ = अपन; कर = हाथ; परसे = स्पर्श; सरसीरुह = कमल; चिकुर = केश, निकर = समूह; निअ = अपन; निहारी = देखिकऽ; जलधर = मेघ; पिक = कोइली; रव = आवाज, निठुर = निष्ठुर।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. प्रस्तुत पाँतीमे शृंगारक कोन प्रकारक वर्णन भेटैत अछि ?
2. नायिकाकेँ अपने शरीरसँ अपने क्लेश भऽ रहल छनि, किएक ?
3. 'धनिक विशेष' पाठ कतऽसँ उद्धृत अछि ?
4. एहि ठाम वर्णित विरहमे ताप उत्पन्न करयवला वस्तुक वर्णन करू ।
5. उक्त कविताक भाव स्पष्ट करू ।
6. नायिकाक विरहाग्निसँ की बुझैत छिऐक ?

गतिविधि :

1. विरहसँ सम्बन्धित कोनो दोसर कविक पद ताकिकेँ लिखू ।
2. विरह शृंगार ककरा कहल जाइत अछि, उदाहरण दऽ बुझाऊ।
3. उक्त कवितामे वर्णित संज्ञा शब्दक चयन करू।
4. पाठमे प्रयुक्त तत्सम शब्द सभक संकलन करू ।
5. निम्नलिखित पद्यक भाव स्पष्ट करू :

   चिकुर-निकर निअ नयन निहारी ।
   जलधर जाल जानि हिअ हारी ।।

निर्देश :

(क) शिक्षकसँ अपेक्षा कयल जाइत अछि जे ओ पारिजात हरणसँ लेल गेल उक्त गीतक प्रसंगक वर्णन छात्रसँ करथि।

(ख) छात्रकेँ रसक सामान्य परिचय दैत ओकर संयोग ओ वियोग दुनू भेदसँ नीक जंकाँ अवगत कराओल जयबाक चाही।

(ग) शिक्षक पारिजात हरणक लेखक आ कथानकक ज्ञान छात्रकेँ कराय देथि।

(घ) मध्यकालीन मैथिली नाट्यधाराक विकासमे उमापतिक की भूमिका रहलनि, छात्रकेँ बुझाओल जयबाक चाही ।

□